भवानी प्रसाद मिश्र' के काव्य में गाँधी–दर्शन :

डॉ0 श्रीमती हीना परवीन
व्याख्याता हिन्दी विभाग, रहमानिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज (मउ) यू0पी0, भारत

सारांश– भवानी प्रसाद 'मिश्र' हिन्दी के ऐसे आधुनिक कवि हैं जिनके विचारों और काव्य सर्जन में गाँधी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। 'मिश्र' जी सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले एक आदर्शवादी और आशावादी कवि के रूप में जाने जाते हैं।
इसी सन्दर्भ में डॉ0 भगीरथ 'मिश्र' का कथन उल्लेखनीय है भवानी प्रसाद 'मिश्र' की चेतना मूलतः आशावादी और कर्मणयतापरक है।''[1] प्रस्तुत आलेख द्वारा हम उनकी आस्था और विश्वास को कविता के माध्यम से जानने व समझने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द–परिचय, कृतित्व, गाँधी–दर्शन एक अवलोकन निष्कर्षः

परिचय– सन् 1951 में 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित दूसरे सप्तक के प्रथम कवि भवानी प्रसाद 'मिश्र' को सहजता का कवि कहा जाता है। जिस समय छायावादी कविता काव्य में अपना श्रेष्ठतम् योगदान दे रही थी ऐसे समय में भी 'मिश्र' जी ने परम्परावादी अन्य कवियों की तरह निराला, प्रसाद और पन्त का अनुकरण नहीं किया अपितु सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण अपनाकर अपने मौलिक भावों को कविता में सरल अभिव्यक्ति प्रदान की। अभिव्यक्ति का सरलतम् रूप उनकी विशेषता बन गया और उसे लोगों ने खूब पसन्द किया। इसी कारण उनकी कविता में चिन्तन से अधिक अनुभूति है।

इसी क्रम में 'मिश्र' जी अपने दर्शन वाद और टेकनीक के विषय में कहते हैं ''दर्शन में अद्वैत, वाद में गांधी का और टेकनीक में सहज लक्ष्य ही मेरे बन जायें ऐसी कोशिश है।''[2]

कृतित्व–भवानी प्रसाद 'मिश्र' की निम्नलिखित काव्य कृतियों में हमें गाँधी–दर्शन का प्रभाव मिलता है।

चकित है दुःख (1968) 2. गाँधी पंचशती (1969) 3. अनाम तुम आते हो (1976) 4. परिवर्तन जिए (1976) 5. त्रिकाल संध्या (1968)

इसके अतिरिक्त एक मात्र खण्ड काव्य कालजयी (1960) पर भी गाँधी दर्शन का प्रभाव है।

गाँधी दर्शन एक अवलोकन :

चकित है दुःख (1968)

'चकित है दुःख' पैंसठ कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह की रचनाएँ घोर व्यक्तिवादी चेतना के विरुद्ध सामाजिक चेतना का ठोस आग्रह लिए हुए है।

इस संग्रह की एक मात्र कविता 'इस परिस्थिति को शब्द दो' में कवि ने युद्ध का विरोध करते हुए प्रण किया है कि अब हम कभी युद्ध नहीं होने देंगे क्योंकि युद्ध सदा से ही हिंसा और विनाश का पर्याय माना गया है।

''एक एक करके पचास करोड़ स्वर उठे शान्ति के
दिशाओं को लोहूलुहान नहीं होने देंगे।''

[1] समकालीन हिन्दी कविता'–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी पृ0–89
[2] भवानी प्रसाद 'मिश्र'/सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अन्तरंग साक्षात्कार–कृष्णदत्त पालीवाल पृ0–99

बस्तियों को मसान नहीं होने देंगे।।''[1]

गांधी पंचशती (1969)–' गाँधी पंचशती' में गाँधी–दर्शन और विचार को आधार बनाकर 'मिश्र' जी ने लगभग 508 कविताओं का संकलन किया है। इसी आधार पर इस कविता संग्रह का नामकरण किया गया है। इस संदर्भ में 'मिश्र' जी का कहना है कि गाँधी–पंचशती में मैंने गाँधी पर कम गाँधी के विचारों पर ज्यादा कविताएँ लिखी हैं। गाँधी के विचार, मेरे विचार बनकर कविता में उतरे हैं जो एक बड़ी बात है।''[2]

गाँधी पंचशती में कवि ने सत्य–अहिंसा, शान्ति, प्रेम, खादी, भेदभाव से विहीन समाज का निर्माण, श्रम की महत्ता, हिन्दी भाषा, साधन और साध्य की एकरूपता, हिंसा का नाश, मद्य निषेध, विदेशी सभ्यता का प्रभाव, आजादी की महत्ता, जीवन आदर्श, सादा जीवन उच्च विचार के साथ ही गांधी जी के लोक कल्याणकारी व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डाला है।

2 अक्टूबर 1942 को रची 'आशंका' शीर्षक कविता में कवि को यह आशंका निरन्तर बनी हुई है कि शस्त्रबल पर यदि शान्ति कायम की गई तो न जाने कब फिर हिंसा भड़क उठे और तबाही आ जाये अतः गाँधी जी के सत्य अहिंसा और प्रेम द्वारा ही शान्ति स्थायी हो सकती है।

''शान्ति अगर आई पृथ्वी पर बिना बात गाँधी की माने
तो कितनी दिन की होगी वह कौन कहे, कोई क्या जाने।''[3]

14 अगस्त 1947, आजादी की पूर्व संध्या में रचित कविता 'एक पत्र' में कवि स्वतंत्रता प्राप्ति पर अपने हृदय के उल्लास और हर्ष को अभिव्यक्त करते हुए कह रहा है–कल का सूर्य हमारे लिए आजादी का पैगाम लाएगा और इस प्रभात को सार्थक बनाने हेतु हम आज से ही अपने कार्यों को आरम्भ कर दें तथा सम्पूर्ण विश्व से भूख और बीमारी जैसी समस्याओं को समाप्त करें। यह कार्य कठिन है परन्तु हम इस कार्य में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देंगे–

''इस बदलने का उठाकर फायदा हम
नया धरती पर उतारें कायदा नम।
प्यार समता, शान्ति सुख से जो भरा हो।''
मरा भी छूलें अगर उसको हरा हे। [4]

कवि ने 'बांझ एक इच्छा' कविता में कथनी और करनी में एकरूपता लाने की पूरी चेष्टा की है। शान्ति सेना का एक सिपाही होने के नाते कवि सबसे पहले आसत्मोत्सर्ग हेतु प्रस्तुत हुआ है। गाँधी –दर्शन अपनी चरम सीमा पर कवि के व्यक्तित्व में बोल उठा है–

''इतना हो सकता है मेरे लिए
कि अगर देश निःशस्त्र भेजना तय करे
पहला सैनिक यह हिन्दी का कवि मरे।''[5]

गाँधी–दर्शन को 'मिश्र' जी ने पूरी श्रद्धा से ग्रहण किया है। गाँधी जी की दृष्टि ने विज्ञान की विभीषिकाओं को देख लिया था। इसी कारण उन्होंने दण्ड शक्ति के स्थान पर प्रेम शक्ति, राज्य शक्ति के स्थान पर लोक शक्ति का विकास करने की प्रेरणा दी। 'मिश्र' जी के काव्य का उज्ज्वलतम्

[1] 'चकित है दुःख'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–67
[2] 'नये कवि : एक अध्ययन'–डॉ0 सन्तोष कुमार तिवारी पृ0–102
[3] 'गाँधी–पंचशती'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–42
[4] ''गाँधी–पंचशती'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–111
[5] 'गाँधी–पंचशती–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–311

पक्ष मानवीय मूल्यों की स्थापना के साथ ही सह–अस्तित्व की भावना है, अतः वचन छाया में वे कहते हैं–

'' जियो और जीने दो
प्रभु बरसा रहे हैं जो सुधा
सो सबको पीने दो।।[1]

भवानी प्रसाद 'मिश्र' जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल मानव जगत को गाँधी–दर्शन की महत्ता का आभास कराया वरन् उसे अपनाने की भी सीख दी। वे स्वयं भी हृदय से गाँधी–दर्शन में विश्वास करने वाले थे। इसी कारण 'असाध्य इच्छा' कविता में उनकी कामना है–

''मोटा पहनूँ थोड़ा खाऊँ
जितना जिसके लिए बन सके करूँ।[2]

अनाम तुम आते हो–(1976)

'अनाम तुम आते हो' में कवि ने सात लम्बी कविताओं का संकलन किया है। लम्बी होने के बावजूद इन कविताओं में सशक्त तारतम्य है। अध्यात्म, व्यवहार, यथार्थ आदर्श और जीवन के जितने भी पहलू हैं इन लम्बी कविताओं में विद्यमान हैं।

'अवधिहीन छोरों से लौटकर' कविता में 'मिश्र' जी कहते हैं–आज का मानव निरन्तर दिशाहीन प्रगति के क्षेत्र में अग्रसर है। वह वैज्ञानिक प्रगति की दौड़ में इतना अधिक व्यस्त है कि उसके पास कहने सुनने का भी वक्त नहीं है। ऐसे समय में कवि स्वयं शान्ति की स्थिति में आना चाहता है और अपने आस–पास को भी उसी स्थिति में पहुँचाना चाहता है–

'' मैं एक शान्ति एक सुन्दरता
एक लय और विलय
की स्थिति में आना चाहता हूँ।।'[3]

'मिश्र' जी ने जिन्दगी की एक सीधी और सरल पद्धति को चुन लिया है जो बड़ी–बड़ी मुसीबतों और तकलीफों में सहारा देती हैं। वह है सादा जीवन उच्च विचार–

मगर जिन्दगी की एक पद्धति
मैंने चुन ली है
वही सादी है और सरल है।।[4]

परिवर्तन जिए' (1976)

'परिवर्तन जिए' इस सग्रह में कुल 99 कविताएँ हैं। 'अनाम तुम आते हो' में जहाँ लम्बी–लम्बी कविताएं संग्रहीत हैं, वहीं 'परिवर्तन जिए' में छोटी–छोटी कविताओं का संग्रह किया गया है। 'परिवर्तन जिए' कवि की दृष्टि में 'इन्कलाब जिन्दाबाद का ही रूपान्तर है। सवाल यह है, कविता में 'मिश्र' जी का कहना है यदि हिंसा के समर्थक शान्ति पर उतर आयें तो फिर उस सेना का क्या होगा जिसे उन्होंने अथक परिश्रम और चिन्ता में पाल पोसकर तैयार किया है और उन शस्त्रों का क्या होगा जिनके निर्माण का उद्देश्य ही उन्हें दूसरों को बेचना था और हिंसा को बढ़ावा देना था। शान्ति का नारा लगाना ठीक और आसान है, किन्तु

[1] 'गाँधी–पंचशती–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–421
[2] 'गाँधी–पंचशती–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–86
[3] 'अनाम तुम आते हो'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–90
[4] अनाम तुम आते हो'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–72

उसे अपनाना अत्यन्त कठिन है। अपने स्वार्थों के लिए हिंसा को बढ़ावा देने वाले कभी भी शान्ति को नहीं अपना सकते।

'वे शान्ति पर
नहीं उतर सकते
यह साफ बात है
क्योंकि बुद्धिजीवी
और मांसजीवी
और सेना उनके साथ है।[1]

'त्रिकाल संध्या' (1978)

'त्रिकाल संध्या' में कुल 96 कविताएं हैं। यह भवानी प्रसाद 'मिश्र' का नवीनतम संकलन है। जिस में आपात काल में लिखी गयी 26 जून 1975 से लेकर 1 अगस्त 1976 तक की रचनाओं का समावेश किया गया है। इस संकलन की ज्यादातर कविताएं व्यंग्यात्मक हैं। इस में राजनीतिक और सामाजिक विषयों को लेकर कवि ने वैविध्य पूर्ण रचनाओं का सृजन किया है।

'तुम भीतर बंद हो और हम बाहर' कविता उस समय पूरी हुई जब आपात काल का एक महीना पूरा हो गया। आपातकाल में जयप्रकाश नारायण सरीखे नेताओं को बंदी बना दिया गया और उनकी खबर न मिल पाने से कवि का हृदय व्यथित है क्योंकि शासन और सत्ता के स्वार्थी नेता कभी भी सत्य का साथ नहीं देंगे, अपितु ऐसी परिस्थितियों को देख कर भीष्म और द्रोणाचार्य के समान मूक दर्शक बने रहेंगे। ऐसे में कवि को सहसा ही गाँधी की स्मृति आ गयी, जिसने खादी और गादी की लड़ाई का नारा दिया था, किन्तु स्वार्थी लोगों ने गाँधी के विचारों को अपने अनुरूप ढाल लिया–

''तौल लिया था चालाक लोगों ने
हमारे सिपहसालार का मन
हमारा वह सिपहसालार
शस्त्रों का धनी नहीं था।
सत्य और प्रेम और करुणा का धनी था[2]

इस समय देश में अनेक समस्याएँ हैं, अतः कवि का मानना है कि जहाँ एक ओर हमें हिमाचल के समान फैली बेकारी, बीमारी, भुखमरी और विवशता की समस्याओं को हल करना है वहीं दूसरी ओर सत्ता के मद में चूर निठल्लेपन, भ्रष्टाचार, और मनमानी आदि समस्याओं का समाधान भी हमें गाँधी–मत से निकालना चाहिए–

'कि बेशक गाँधी के ढंग से इन
दोहरी समस्याओं का हल
निकाला जाना चाहिए
देखा भाला जाना चाहिए।''[3]

[1] 'परिवर्तन जिए'– भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–104–105

[2] 'त्रिकाल संध्या'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–131
[3] 'त्रिकाल संध्या'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–131

कालजयी– (1980)

कालजयी भवानी प्रसाद 'मिश्र' का एकमात्र खण्डकाव्य है, जिसका प्रकाशन सन् 1980 में हुआ। अशोक जैसे ऐतिहासिक पात्र को लेकर कवि ने कालजयी के कथानक का तानबाना बुना है।

अशोक के चरित्र के माध्यम से कवि ने गाँधी–दर्शन के सिद्धान्तों, सत्य, अहिंसा, शान्ति और हृदय परिवर्तन साथ सामंजस्य स्थापित किया है। इसके मूल में कवि की गाँधी आत्मा ही परिलक्षित हुई है। यह कथा कलिंग युद्ध के पश्चात वीर सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन और कालजयी कवि भवानी प्रसाद मिश्र की गाँधी–दर्शन में आस्था को प्रकट करती है।

कलिंग के युद्ध के पश्चात यद्यपि अशोक विजयी हुआ किन्तु युद्ध की विनाशलीला ने उसे विचार करने पर विवश कर दिया था। अतः वह अपनी पत्नी देवी से कहता है संस्कार देने से भी अधिक कठिन कार्य शुभ संस्कारों को ग्रहण करना है। यह कठिन कार्य ही करणीय है, चाहे इसके लिए प्राणों की आहुति ही क्यों न देनी पड़े–

''युद्ध को कितना दिया अवसर
तनिक–सा शांति को दे
आदमी जब से हुआ तब से लड़ा है
किन्तु लड़कर किस दिशा में वह बढ़ा है।''[1]

मानव समाज प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है, किन्तु यह प्रगति उसे मानवीय भावनाओं और सामाजिक हितों से दूर ले जा रही ही, अतः कवि मानव को प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने की प्ररेणा देने के साथ ही आधुनिक विज्ञान एवं टेक्नालॉजी की ध्वंसक भूमिका से सावधान करता हुआ कह रहा है–

''जितना सभ्य हुआ जो अंचल
उसने उतनी सैन्य बढ़ाई
शस्त्र–सज्ज होने की धुन।''[2]

अशोक के माध्यम से कवि ने 'कालजयी' में प्रजातंत्र के मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया है और राजा को प्रजा के सेवक के रूप में प्रस्तुत किया है क्योंकि प्रजा ही राजा को शक्ति और सामर्थ्य देकर अपना राजा घोषित करती है–

''किसने कहा निर्णय का
प्रजा को अधिकार नहीं
शासक जो यहाँ के हैं वे
सेवक हैं आपके।''[3]

निष्कर्ष–गाँधी विचार और आन्दोलन ने हर पक्ष का इतिहास कहने की काव्य प्रेरणा ने भवानी प्रसाद 'मिश्र' को जनता और जनतंत्र का कवि बना दिया। कवि ने अपनी आस्था को खादी, गाँधी में पूर्ण रूपेण व्यक्त किया है। गाँधी ने इस देश को अपना माना और इसके लिए अपने प्राणों की आहुति दी अतः गांधी के देश प्रेम, त्याग और मानव प्रेम से प्रभावित कवि ने गाँधी को हृदय से स्वीकार किया है। वहीं दूसरी ओर खादी के प्रति कवि की दृष्टि स्नेह बंधन की है। वे खादी को राष्ट्रीयता का ही नहीं मानवता का भी प्रतीक मानते हैं।

[1] 'कालजयी– भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–88
[2] 'कालजयी– भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–93
[3] 'कालजयी– भवानी प्रसाद 'मिश्र' पृ0–50

शस्त्रों के द्वारा हृदय को नहीं जीता जा सकता अपितु इसके लिए प्रेम की आवश्यकता है और शस्त्रों से विहीन विश्व में ही शांति और प्रेम का बिरवा पनप सकता है। तीनों सप्तकों में भवानी प्रसाद 'मिश्र' की गाँधी दर्शन में पूर्णतः आस्था रखने वाले कवि हैं।

सहायक ग्रंथ

आधार ग्रन्थ

1. 'अनाम तुम आते हो'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' सरल प्रकाशन दिल्ली संस्करण–1976
2. 'आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि' (भगवती चरण वर्मा) राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, दूसरा संस्करण–1966
3. 'आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि' (माखनलाल चतुर्वेदी) सम्पादक हरिकृष्ण प्रेमी राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली।
4. 'आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि' (डॉ0 रामकुमार वर्मा) सम्पादक, राधाकृष्णन श्रीवास्तव, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली प्रथम सं0–1975
5. कालजयी–भवानी प्रसाद 'मिश्र' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1986
6. गाँधी पंचशती– भवानी प्रसाद 'मिश्र' सरला प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–1969
7. गाँधी अभिनन्दन ग्रन्थ (सं0) सोहनलाल द्विवेदी गाँधी अभिनन्दन ग्रन्थ 'कार्यालय लखनऊ (सं0) सोहनलाल द्विवेदी
8. 'चकित है दुख–भवानी प्रसाद 'मिश्र' सरला प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–1977
9. 'परिवर्तन जिए'–भवानी प्रसाद 'मिश्र' सरल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–1976
10. 'मृत्युँजयी'–संपादक भवानी प्रसाद मिश्रः डॉ0 प्रभाकर माचवे। शब्दकार, तुर्कमान गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1989
11. त्रिकाल संध्या–भवानी प्रसाद 'मिश्र'राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, प्रथम संस्करण–1978

(ख) सहायक ग्रन्थ

1. 'आधुनिक हिन्दी कविता में गाँधीवाद'–डॉ0 मिताली भट्टाचार्य ऋषभ चरण जैन एवं सन्तति दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1990
2. 'आज का भारत'–ए0के0 सिंह गम्भीर प्रकाशन मीना बाग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1988
3. 'कालजयी कवि भवानी प्रसाद मिश्र' डॉ0 हरिमोहन वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण–1986
4. 'गांधीवाद और हिन्दी काव्य'–भक्तराम शर्मा आर्य प्रकाशन मंडल सरस्वती भण्डार, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1995
5. 'गाँधी हिन्दी दर्शन'–सम्पादक गोपाल प्रसाद 'व्यास'। दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नई दिल्ली।
6. 'गाँधी और गाँधीवाद'–डॉ0 बी0 पट्टाभि सीतारमय्या शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी प्रकाशन प्रा0 लि0 आगरा, प्रथम संस्करण–1957
7. 'गाँधीवाद की रूपरेखा' : श्रीरामनाथ 'सुमन' सधना सदन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1939
8. 'गाँधीवाद समाजवाद'– (सं0) काका कालेलकर सस्ता साहित्य मण्डल, संस्करण मई–1939
9. 'नये कवि एक अध्ययन'–डॉ0 संतोष कुमार तिवारी भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष–1991
10. 'भवानी प्रसाद मिश्र/सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अंतरंग साक्षात्कार'–कृष्णदत्त पालीवाल सचिन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1976

11. 'भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य यात्रा'—डॉ0 संतोष कुमार तिवारी भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली प्रथम संस्करण—1983

12. 'भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार'—डॉ0 कृष्णदत्त पालीवाल साहित्य निधि कृष्णनगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण—1983

13. 'समकालीन हिन्दी कविता'—विश्वनाथ प्रसाद तिवारी। राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम सं0—1982

14. 'हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि'—डॉ0 श्रीनिवास शर्मा तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण—1977